रूसी लोक-कथा

गुलाबी सेब और सोने का कटोरा

गुलाबी सेब और सोने का कटोरा : रूस की लोक-कथा (हिंदी कहानी)

गुलाबी सेब और सोने का कटोरा : रूसी लोक-कथा

The Rosy Apple and the Golden Bowl : Russian Folk Tale

एक बार एक बूढ़े पति पत्नी अपनी तीन बेटियों के साथ रहते थे। उनकी दोनों बड़ी बेटियाँ तो बहुत ही बेरहम और आलसी थीं पर उनकी सबसे छोटी बेटी तान्या बहुत ही शान्त और सीधे स्वभाव की थी।

उनकी दोनों बड़ी बेटियाँ आलसी तो थी हीं पर साथ में वे बेवकूफ भी बहुत थीं। वे सारे दिन घर में बैठी रहतीं जबकि तान्या सारे दिन सुबह से शाम तक घर और बागीचे में काम करती रहती।

एक दिन उनके पिता को भूसा ले कर उसको बेचने के लिये बाजार जाना था तो उसने अपनी तीनों बेटियों से कहा कि वह वहाँ से उन सबके लिये कुछ न कुछ ले कर आयेगा।

तो उसकी बड़ी बेटी बोली – "पिता जी आप मेरे लिये सिल्क का कपड़ा ले कर आइयेगा।"

उसकी दूसरी बेटी बोली – "पिता जी मेरे लिये आप लाल मखमल का कपड़ा ले कर आइयेगा।"

पर तान्या कुछ नहीं बोली तो उसके पिता ने पूछा – "और तान्या तुम्हारे लिये? तुम्हारे लिये मैं क्या लाऊँ?"

तान्या बोली – "एक गुलाबी सेब और एक सोने का कटोरा।"

यह सुन कर उसकी बड़ी बहिनें बड़ी ज़ोर से हँसीं और बोलीं – "अरे तुम कितनी बेवकूफ हो। हमारे घर में तो कितना बड़ा सेब का बागीचा है। तुमको जितने चाहिये उतने सेब तोड़ लो। फिर तुम पिता जी से सेब क्यों मँगवा रही हो?

और जहाँ तक कटोरे का सवाल है वह तुम्हें किस लिये चाहिये? क्या करोगी तुम उसका? क्या तुम उसमें बतख को खाना खिलाओगी?"

"नहीं मेरी बहिनों। मैं सेब को कटोरे में लुढ़काऊँगी और कुछ जादू के शब्द बोलूँगी। एक बार मैंने एक भिखारिन को एक केक दिया था तो उसने मुझे वे शब्द बताये थे।"

यह सुन कर उसकी बहिनें अबकी बार और ज़ोर से हँस पड़ीं। उनकी हँसी की आवाज सुन कर उनका पिता वहाँ आ गया और बोला – "बस बस काफी हो गया। मैं तुम सबके लिये तुम्हारी पसन्द की चीज़ें ले कर आऊँगा।"